

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान नाथद्वारा, राजसमन्द (राज.)



राजस्थान सरकार एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त

क्रियात्मक अनुसंधान बी.एस.टी.सी. (डी.एल.एड.)

प्रथम वर्ष / द्वितीय वर्ष

सत्र - 20.... - 20....

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम पिंकी दसाणा
पिता का नाम राम सिंह जी शैक्षिक योग्यता D.El.ED 1st year
अनुक्रमांक _____ वर्ग _____
शिक्षण विद्यालय का नाम रा. उ. मा. विद्यालय, बडगौव (कुम्भ.)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/कु./श्रीमति पिंकी दसाणा

ने बी.एस.टी.सी.

प्रथम/द्वितीय वर्ष सत्र _____ में

कार्य मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है।

प्रभारी अध्यापक
हस्ताक्षर

संकेतिका

क्र.सं.	प्रकरण का शीर्षक एवं उपशीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	समस्या की पहचान	1-3
2.	क्रियात्मक परिकल्पना	4-5
	⇒ कार्य विधि	6
	⇒ प्रश्नावली	7-8
3.	कारण	9
4.	विरलेषण	10
5.	सुधार कार्य-विधि	11-12
6.	निष्कर्ष व सुझाव	13-14

क्रियात्मक अनुसंधान

परिभाषा—क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यावहारिक कार्यकर्ता वैज्ञानिक ढंग से अपनी समस्याओं का अध्ययन अपने निर्णय और क्रियाओं का निर्देशन, सुधार और मूल्यांकन करते हैं। इससे स्पष्ट है कि क्रियात्मक अनुसंधान वास्तविक क्रिया में सुधार लाने का एक सफल प्रयोग है।

गुड के अनुसार, “ क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों और कार्यों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।”

अनुसंधान की विशेषताएँ—इससे शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत सभी शिक्षक, अधिकारी, समाज सुधारक क्रियाशील रहते हैं। शिक्षक संवेदनशील समस्याओं के प्रति जागरूक हो जाते हैं।

आवश्यकता—रूढ़ीवादी क्रिया पद्धति में परिवर्तन कर उसे आधुनिक पद्धति में परिवर्तित करने हेतु आज आवश्यकता है। छात्रों की ज्ञान पद्धति व शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के उपायों की खोज की आवश्यकता है।

महत्त्व—क्रियात्मक अनुसंधान की सहायता से विद्यालय की स्थानीय समस्या का समाधान किया जा सकता है। इस अनुसंधान की कक्षागत समस्याएँ अधिगम की समस्या का समाधान सम्भव है।

क्षेत्र—

1. कक्षा शिक्षण सम्बन्धी समस्या,
2. अधिगम सम्बन्धी समस्या,
3. मूल्यांकन तथा परीक्षा सम्बन्धी समस्या,
4. शिक्षण के स्कूल परित्याग,
5. सहगामी प्रवृत्तियाँ को संचालन आदि समस्याएँ।

क्रियान्वयन—अनुसंधानकर्ता अपने-अपने तरीके से साधनों के अन्य सहयोग से शोध क्रिया कर सकते हैं। सुविधा की दृष्टि से निम्न प्रकार प्रारूप तैयार कर शोधकार्य किया जा सकता है—

मुख्य पृष्ठ पर—समस्या का शीर्षक, शोधकर्ता का नाम, पता, समय (अवधि)

अन्दर के पृष्ठों में—प्रस्तावना, समस्या का स्पष्टीकरण, क्रियात्मक क्षेत्र की परिकल्पना, शोध की अवधि, परिसीमन, कार्यविधि न्यादर्श, उपकरण, दत्तों का विश्लेषण, निष्कर्ष निर्धारण, सुझाव और क्रियान्वयन।

क्रियात्मक अनुसंधान

* शीर्षक :-

कक्षा 1 व 2 के विद्यार्थियों को अंग्रेजी में वर्णमाला [A to Z] को लिखने व उनकी पहचान तथा उनका उच्चारण में होने वाली अशुद्धियों के सुधार हेतु अनुसंधान ।

समस्या का स्थान :-

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय , बडगाँव
कुम्भलगढ (राजसमंद)

शोधकर्ता :- पिकी दसाणा

अवधि :- 25 दिवसीय

रामस्था की पृष्ठभूमि

(i) कक्षा 1 व 2 के विद्यार्थियों को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों को केवल रटाया गया है, इस कारण वे वर्णमाला को पहचानकर उनका उच्चारण नहीं कर पाते हैं।

(ii) विद्यार्थी वर्णमाला के अक्षरों को सही तरीके से लिख नहीं पाते हैं या फिर वे उसको उल्टा लिख देते हैं, जैसे -

O को Q लिखना

E को 3 लिखना

(iii) कुछ विद्यार्थी को सही तरीके से उच्चारण में गलती होती है, जैसे कि वह Q का उच्चारण 7 करना।

(iv) विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव से न सिखाने पर वे वर्णमाला के अक्षरों को पहचान नहीं पाते हैं।

क्रियात्मक परिकल्पना

(i) विद्यार्थियों को सर्वप्रथम वर्णमाला की TLM सामग्री या अन्य प्रत्यक्ष तरीके से पहचान करवा कर उनको सही उच्चारण करवाया जाए। जिससे की मौखिक अक्षरादियों में सुधार हो सके तथा वे वर्णमाला के अक्षरों को पहचान सकें।

(ii) प्रतिदिन लिखित कार्य अर्थात् सुलेख कराया जाए और फिर किए गए कार्य की जाँच करके विद्यार्थियों की अक्षरादियों को समझाकर उनमें सुधार कार्य करवाया जाए तो लिखावट सम्बन्धित अक्षरादियाँ दूर हो सकती हैं।

(iii) विद्यार्थियों को Alphabet की TLM सामग्री द्वारा प्रत्यक्ष आधिगम करवाया जाए तो वे Alphabet को पहचान कर आसानी से उनका उच्चारण कर सकते हैं।

कार्य विधि

आरम्भ की जाने वाली क्रियाएँ

शिक्षण

सभी Alphabet की पहचान करवाना,
जिसमें Small Alphabet [a, b, c, d, e,
f, g, h, i, j, k, l, m, n, o, p, q, r, s,
t, u, v, w, x, y, z] तथा Capital
Letter [A, B, C, D, E, F, G, H, I,
J, K, L, M, N, O, P, Q, R, S, T,
U, V, W, X, Y, Z] में अंतर
को समझाना

Alphabet
करवाना
एक
करवाना

शिक्षक द्वारा सुझातम अक्षर लेखन
का निरीक्षण करके सुधार
करना ।

कक्षा
अभ्यास,

Alphabet का नियमित लिखित
व मौखिक अभ्यास

लिखित सामग्री को टोली में
वितरित करना

प्रत्येक
सामग्री
लेखन

गिदी

अपेक्षित सामग्री

el का मौखिक अभ्यास
तथा दोनों Letter को
साथ लिखकर उच्चारण
जैसे - Aa, Bb,
Cc, Dd, Ee -

TLM सामग्री जैसे -

A for Apple के लिए
Apple का चित्र .

B for Boy या Bvii का
चित्र -

कार्य, ग्यामपट्ट पर
मौखिक अभ्यास
करवाना ।

सीधी रेखा वाले Alphabet
व गोल आकार वाले
Alphabet में अंतर समझाने
की सामग्री

—//—

Alphabet के meaning को
वस्तुओं से प्रत्यक्ष जोड़ना

विद्यार्थी को प्राप्त
का उच्चारण व
कार्य करवाना

सहायक सामग्री
पुस्तक व पट्टी - पहाड़ा

शोध की अवधि व परिसीमन =

इस 24 दिवसीय इंटर्नशिप कार्यकाल में कक्षा 1 व 2 के Alphabet संबंधित क्रियात्मक अनुसंधान को आसानी से सकल बनाया जा सकता है।

प्रतिदिन दो Alphabet के द्वारा भी आसानी से सम्पूर्ण अंग्रेजी माला के वर्णमाला की पहचान, उच्चारण व लिखावट को शुद्ध किया जा सकता है।

प्रश्नावली =

(i) सीधी रेखा / डण्डे वाले Alphabet पर खोला बनाओ :-

A, C, H, O, X, Z, Q, S, T

(ii) सुमेलित करो :-

H	m
S	e
M	h
B	g
I	s
G	i
E	b

(iii) खाली स्थान भरो :-

I — K

L — N

X — Z

P — R

M — O

U — W

* उद्देश्य :-

⇒ कक्षा 1 व 2 को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों की सही पहचान करवाना।

⇒ Alphabet की उच्चारण सम्बन्धित अक्षुद्धियों को दूर करना।

⇒ Small Letter व Capital Letter के मध्य अंतर को समझाना।

⇒ Alphabet के लिखावट को सुधारना।

⇒ b व d, p व q के मध्य अंतर को समझाना व उच्चारण करवाना।

⇒ Alphabet की meaning को भी समझाना।

कारण

1. विद्यार्थी लिखित कार्य ध्यानपूर्वक नहीं करते हैं, जिस कारण त्रुटियाँ होती हैं।

2. विद्यार्थी Alphabet को केवल मौखिक रखा जाता है, इस कारण वे Alphabet के किसी भी वर्ण को समझ नहीं पाते हैं।

3. Alphabets के शुद्ध उच्चारण का महत्व नहीं बताया गया।

4. पूरे विद्यार्थियों के घर-परिवार में नहीं बताया गया, इस कारण उनके लिए प्रत्येक चीज नई है।

5. कक्षा 2 के विद्यार्थियों को भी पूर्व शिक्षकों द्वारा त्रुटियों को नहीं समझाया गया।

6. विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण के लिए प्रेरित नहीं किया गया।

7. विद्यार्थियों के प्रत्यक्ष अनुभव से उच्चारण को नहीं समझाया गया।

8. कक्षा - शिक्षण के दौरान विद्यालय में उपलब्ध TLM सामग्री का उपयोग नहीं किया गया।

9. विद्यार्थियों की गलती में सुधारआत्मक परिवर्तन की अपेक्षा की गई।

कारण	साक्षी	तथ्य / अनुमान	शोधकर्ता का नियंत्रण
विद्यार्थी Alphabet को पहचान नहीं पाते	विद्यार्थियों को Alphabet की पहचान कराई गई	तथ्य	अन्तर्गत
विद्यार्थी लिखित कार्य ध्यानपूर्वक नहीं करते	लिखित कार्य की जाँच के बाद जात हुआ	तथ्य	अन्तर्गत
विद्यार्थियों की शुद्ध उच्चारण नहीं आता	उच्चारण परीक्षण के बाद जात हुआ	—//—	—//—

* उपकरण :-

- (i) TLM सामग्री
- (ii) चार्ट
- (iii) रंगीन चॉक
- (iv) श्यामपट्ट
- (v) रंगीन पेन्सिल
- (vi) पाठ्यपुस्तक की अध्याय
- (vii) कॉपी में लिखावट
- (viii) खेल विधि

विश्लेषण

* शोध के पूर्व की स्थिति :-

विद्यार्थियों की संख्या	कक्षा	अशुद्ध उच्चारण व लेखन करने वाले विद्यार्थी	शुद्ध उपयोग विद्यार्थी
20	1, 2	12	8

⇒ विद्यार्थियों को alphabets को पहचानने में
कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

⇒ उच्चारण व लेखन में भी अशुद्धियाँ करना।

सुधार कार्य

1. लेखन सुधार हेतु विद्यार्थियों को गृहकार्य व कक्षा-शिक्षण के दौरान कॉपी में कार्य दिया गया।
2. प्रत्येक विद्यार्थी से उच्चारण कराया गया तथा अशुद्ध उच्चारण में सुधार किया।
3. Alphabets की पहचान हेतु विद्यार्थियों को श्यामपट्ट पर रंगीन चॉक से लिखे Alphabets को पहचानने हेतु प्रेरित किया गया।
4. चार्ट के माध्यम से Small Letter व Capital Letter के मध्य अंतर व लेखन की समझाया गया, जैसे —

Aa	Bb	Cc	Dd	Ee	Ff
Gg	Hh	Ii	Jj	Kk	Ll
Mm	Nn	Oo	Pp	Qq	Rr
Ss	Tt	Uu	Vv	Ww	Xx
Yy	Zz	°°			

* शोध के पश्चात की स्थिति:-

विद्यार्थियों की संख्या	कक्षा	अशुद्ध उच्चारण व लेखन करने वाले विद्यार्थी	शुद्ध उच्चारण व लेखन विद्यार्थी
20	1, 2	4	16

सुधार कार्य करने के पश्चात अशुद्ध उच्चारण करने वाले विद्यार्थियों में उपर्युक्त व उत्तम सुधारात्मक कार्य हुआ।

लगभग सभी विद्यार्थी सही उच्चारण करने लगे।

बार-बार अभ्यास से लेखन में सुधार हुआ।

आधिकांश विद्यार्थी Alphabets को आसानी से पहचानने लगे।

वे Small व Capital Letter को समझने लगे।

निष्कर्ष

- ⇒ शोध के पूर्व व पश्चात की स्थिति के मध्य तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी उच्चारण, पहचानने व लेखन में स्तर की वृद्धि हुई है।
- ⇒ क्रियात्मक शोध के द्वारा समस्या का निराकरण काफी सीमा तक सफल हुआ।
- ⇒ प्रयोग की गई शिक्षण विधियाँ तथा गतिविधियों में विद्यार्थी रुचि लेने लगे।
- ⇒ विद्यार्थी बार-बार लेखन कार्य लेने लगे।
- ⇒ यदि नियमित रूप से विधियाँ व उपायों को जारी रखा जाए व उनका क्रियान्वयन हो तो शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त की जा सकती है।
- ⇒ मंद बुद्धि के विद्यार्थी भी पढ़ने में रुचि लेने लगे।

सुझाव

- (i) विद्यार्थियों के अभिभावक यदि इच्छात से ही उच्चारण करवाने में जागरूक हों तो विद्यार्थी ऐसी अशुद्धियाँ नहीं करते।
- (ii) साथ ही शिक्षकों को भी प्रारम्भ से ऐसी उच्चारण व लेखन सम्बन्धित अशुद्धियों का ध्यान रखना चाहिए।
- (iii) समय-समय पर विद्यार्थियों का परीक्षण करना चाहिए — मौखिक, लिखित व अक्षर ज्ञान के रूप में।
- (iv) विद्यार्थियों को एक-दूसरे की सहायता व समझाने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

समाप्त